

سُورَةُ الْفَتْحِ

Surah 48 — Al-Fath (The Victory) · Medinan · 29 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا

(ऐ रसूल) ये हुबैदिया की सुलह नहीं बल्कि हमने हकीकतन तुमको खुल्लम खुल्ला फतेह अता की

2

لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا

ताकि खुदा तुम्हारी उम्मत के अगले और पिछले गुनाह माफ़ कर दे और तुम पर अपनी नेअमत पूरी करे और तुम्हें सीधी राह पर साबित क़दम रखे

3

وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا

और खुदा तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे

4

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيمَانِهِمْ وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا

वह (वही) खुदा तो है जिसने मोमिनीन के दिलों में तसल्ली नाज़िल फरमाई ताकि अपने (पहले) ईमान के साथ और ईमान को बढ़ाएँ और सारे आसमान व ज़मीन के लश्कर तो खुदा ही के हैं और खुदा बड़ा वाक्फ़िकार हकीम है

5

لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفَّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا

ताकि मोमिन मर्द और मोमिना औरतों को (बेहिश्त) के बाग़ों में जा पहुँचाए जिनके नीचे नहरें जारी हैं और ये वहाँ हमेशा रहेंगे और उनके गुनाहों को उनसे दूर कर दे और ये खुदा के नज़दीक बड़ी कामयाबी है

6

وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّالِمِينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ
عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۚ وَسَاءَتْ
مَصِيرًا ۚ

और मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्द और मुशरिक औरतों पर जो खुदा के हक़ में बुरे बुरे ख्याल रखते हैं अज़ाब नाज़िल करे उन पर (मुसीबत की) बड़ी गर्दिश है (और खुदा) उन पर ग़ज़बनाक है और उसने उस पर लानत की है और उनके लिए जहन्नूम को तैयार कर रखा है और वह (क्या) बुरी जगह है

7

وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا

और सारे आसमान व ज़मीन के लश्कर खुदा ही के हैं और खुदा तो बड़ा वाकिफ़कार (और) ग़ालिब है

8

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَهِيدًا ۚ وَمُبَشِّرًا ۚ وَنَذِيرًا ۚ

(ऐ रसूल) हमने तुमको (तमाम आलम का) गवाह और खुशख़बरी देने वाला और धमकी देने वाला (पैग़म्बर बनाकर) भेजा

9

لِتُؤْمِنُوا ۚ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً ۚ وَأَصِيلًا

ताकि (मुसलमानों) तुम लोग खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसको बुज़ुर्ग़ समझो और सुबह और शाम उसी की तस्बीह करो

10

إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ
عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ فَمُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۚ

बेशक जो लोग तुमसे बैयत करते हैं वह खुदा ही से बैयत करते हैं खुदा की क़वत (कुदरत तो बस सबकी क़वत पर) ग़ालिब है तो जो अहद को तोड़ेगा तो अपने अपने नुक़सान के लिए अहद तोड़ता है और जिसने उस बात को जिसका उसने खुदा से अहद किया है पूरा किया तो उसको अनक़रीब ही अज़्रे अज़ीम अता फ़रमाएगा

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُولُونَ بِالسِّنْتِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

जो गंवार देहाती (हुदैबिया से) पीछे रह गए अब वह तुमसे कहेंगे कि हमको हमारे माल और लड़के वालों ने रोक रखा तो आप हमारे वास्ते (खुदा से) मगफिरत की दुआ माँगें ये लोग अपनी ज़बान से ऐसी बातें कहते हैं जो उनके दिल में नहीं (ऐ रसूल) तुम कह दो कि अगर खुदा तुम लोगों को नुकसान पहुँचाना चाहे या तुम्हें फायदा पहुँचाने का इरादा करे तो खुदा के मुकाबले में तुम्हारे लिए किसका बस चल सकता है बल्कि जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे खूब वाकिफ है

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا ۚ وَزَيَّنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنًّا سَوْءًا وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝

(ये फ़क़त तुम्हारे हीले हैं) बात ये है कि तुम ये समझे बैठे थे कि रसूल और मोमिनीन हरगिज़ कभी अपने लड़के वालों में पलट कर आने ही के नहीं (और सब मार डाले जाएँगे) और यही बात तुम्हारे दिलों में भी खप गयी थी और इसी वजह से, तुम तरह तरह की बदगुमानियाँ करने लगे थे और (आखिरकार) तुम लोग आप बरबाद हुए

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝

और जो शरूख़ खुदा और उसके रसूल पर ईमान न लाए तो हमने (ऐसे) काफ़िरों के लिए जहन्नुम की आग तैयार कर रखी है

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

और सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत खुदा ही की है जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे सज़ा दे और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۖ يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا ۖ كَلَّمَ اللَّهُ ۖ قُلْ لَنْ تَتَّبِعُونَا كَذَلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ ۖ فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا ۖ بَلْ كَانُوا ۖ لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ

(मुसलमानों) अब जो तुम (खैबर की) गनीमतों के लेने को जाने लगोगे तो जो लोग (हुदैबिया से) पीछे रह गये थे तुम से कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो ये चाहते हैं कि खुदा के क़ौल को बदल दें तुम (साफ) कह दो कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चलने पाओगे खुदा ने पहले ही से ऐसा फ़रमा दिया है तो ये लोग कहेंगे कि तुम लोग तो हमसे हसद रखते हो (खुदा ऐसा क्या कहेगा) बात ये है कि ये लोग बहुत ही कम समझते हैं

قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُو۟لِيَٰٓ الْأَسْبَاطِ ۖ شَدِيدِ ۖ تَقْتُلُونَهُمْ أَوْ يَسْلَمُونَ ۖ فَإِنْ تُطِيعُوا ۖ يُو۟تِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا ۖ كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ

कि जो गवॉर पीछे रह गए थे उनसे कह दो कि अनक़रीब ही तुम सख्त जंगज़ू क़ौम के (साथ लड़ने के लिए) बुलाए जाओगे कि तुम (या तो) उनसे लड़ते ही रहोगे या मुसलमान ही हो जाएँगे पस अगर तुम (खुदा का) हुक्म मानोगे तो खुदा तुमको अच्छा बदला देगा और अगर तुमने जिस तरह पहली दफा सरताबी की थी अब भी सरताबी करोगे तो वह तुमको दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرْجٌ ۖ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرْجٌ ۖ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرْجٌ ۖ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَمَنْ يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ

(जेहाद से पीछे रह जाने का) न तो अन्धे ही पर कुछ गुनाह है और न लँगड़े पर गुनाह है और न बीमार पर गुनाह है और जो शरूश खुदा और उसके रसूल का हुक्म मानेगा तो वह उसको (बेहिश्त के) उन सदाबहार बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और जो सरताबी करेगा वह उसको दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा

﴿ لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَبَهُمْ فَتْحًا ۖ قَرِيبًا ۖ﴾

जिस वक्त मोमिनीन तुमसे दरख्त के नीचे (लड़ने मरने) की बैयत कर रहे थे तो खुदा उनसे इस (बात पर) जरूर खुश हुआ गरज जो कुछ उनके दिलों में था खुदा ने उसे देख लिया फिर उन पर तस्सली नाज़िल फरमाई और उन्हें उसके एवज़ में बहुत जल्द फ़तेह इनायत की

﴿ وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً ۖ يَأْخُذُونَهَا ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۖ﴾

और (इसके अलावा) बहुत सी ग़नीमतें (भी) जो उन्होंने हासिल की (अता फरमाई) और खुदा तो ग़ालिब (और) हिकमत वाला है

﴿ وَعَدَكُمْ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً ۖ تَأْخُذُونَهَا فَعَجَلَ لَكُمْ هَذِهِ ۖ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ ءَايَةً ۖ لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا ۖ مُسْتَقِيمًا ۖ﴾

खुदा ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वायदा फरमाया था कि तुम उन पर काबिज़ हो गए तो उसने तुम्हें ये (ख़ैबर की ग़नीमत) जल्दी से दिलवा दीं और (हुबैदिया से) लोगों की दराज़ी को तुमसे रोक दिया और गरज ये थी कि मोमिनीन के लिए (कुदरत) का नमूना हो और खुदा तुमको सीधी राह पर ले चले

﴿ وَأُخْرَىٰ لَمْ تَقْدِرُوا ۖ عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۖ﴾

और दूसरी (ग़नीमतें भी दी) जिन पर तुम कुदरत नहीं रखते थे (और) खुदा ही उन पर हावी था और खुदा तो हर चीज़ पर क़ादिर है

﴿ وَلَوْ قَتَلْتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لَوَلَّوْا ۖ الْأَدْبَرَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا ۖ وَلَا نَصِيرًا ۖ﴾

(और) अगर कुफ़ार तुमसे लड़ते तो जरूर पीठ फेर कर भाग जाते फिर वह न (अपना) किसी को सरपरस्त ही पाते न मददगार

﴿ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۖ﴾

यही खुदा की आदत है जो पहले ही से चली आती है और तुम खुदा की आदत को बदलते न देखोगे

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ ۚ بَعْدَ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا

और वह वही तो है जिसने तुमको उन कुफ़रार पर फ़तेह देने के बाद मक्के की सरहद पर उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए और तुम लोग जो कुछ भी करते थे खुदा उसे देख रहा था

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ ۚ مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ ۚ مُؤْمِنَاتٌ ۚ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَّوَّهُمْ فِتْصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ ۚ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ ۚ لِيَدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا ۚ لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا

ये वही लोग तो हैं जिन्होंने कुफ़ किया और तुमको मस्जिदुल हराम (में जाने) से रोका और कुरबानी के जानवरों को भी (न आने दिया) कि वह अपनी (मुकरर) जगह (में) पहुँचने से रूके रहे और अगर कुछ ऐसे ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें न होती जिनसे तुम वाकिफ़ न थे कि तुम उनको (लड़ाई में कुफ़रार के साथ) पामाल कर डालते पस तुमको उनकी तरफ से बेख़बरी में नुकसान पहुँच जाता (तो उसी वक्त तुमको फतेह हुई मगर ताखीर) इसलिए (हुई) कि खुदा जिसे चाहे अपनी रहमत में दाखिल करे और अगर वह (ईमानदार कुफ़रार से) अलग हो जाते तो उनमें से जो लोग काफ़िर थे हम उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ज़रूर सज़ा देते

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ الْحَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ ۚ عَلَى رَسُولِهِ ۚ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا ۚ أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۚ

(ये वह वक्त) था जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद ठान ली थी और ज़िद भी तो जाहिलियत की सी तो खुदा ने अपने रसूल और मोमिनीन (के दिलों) पर अपनी तरफ़ से तसकीन नाज़िल फ़रमाई और उनको परहेज़गारी की बात पर कायम रखा और ये लोग उसी के सज़ावार और अहल भी थे और खुदा तो हर चीज़ से ख़बरदार है

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلَنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ
ءَامِنِينَ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ ۚ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا ۚ فَجَعَلَ مِنْ
دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا ۚ قَرِيبًا

बेशक खुदा ने अपने रसूल को सच्चा मुताबिके वाक़ेया ख़्वाब दिखाया था कि तुम लोग इन्शाअल्लाह मस्जिदुल हराम में अपने सर मुँडवा कर और अपने थोड़े से बाल कतरवा कर बहुत अमन व इत्मेनान से दाखिल होंगे (और) किसी तरह का खौफ न करोगे तो जो बात तुम नहीं जानते थे उसको मालूम थी तो उसने फ़तेह मक्का से पहले ही बहुत जल्द फतेह अता की

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ ۚ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ ۚ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَكَفَىٰ
بِاللَّهِ شَهِيدًا ۚ

वह वही तो है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा ताकि उसको तमाम दीनों पर ग़ालिब रखे और गवाही के लिए तो बस खुदा ही काफ़ी है

مُحَمَّدٌ ۚ رَسُولُ اللَّهِ ۚ وَالَّذِينَ مَعَهُ ۚ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ ۚ تَرَاهُمْ
رُكَّعًا ۚ سُجَّدًا ۚ يَبْتَغُونَ فَضْلًا ۚ مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۚ سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِّنْ
أَثَرِ السُّجُودِ ۚ ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ ۚ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْئَهُ ۚ
فَأَازَرَهُ ۚ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سُوْقِهِ ۚ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ۚ وَعَدَ
اللَّهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً ۚ وَأَجْرًا عَظِيمًا ۚ

मोहम्मद खुदा के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं काफ़ि़रों पर बड़े सख्त और आपस में बड़े रहम दिल हैं तू उनको देखेगा (कि खुदा के सामने) झुके सर बसजूद हैं खुदा के फज़ल और उसकी खुशनूदी के ख्वास्तगार हैं कसरते सुजूद के असर से उनकी पेशानियों में घट्टे पड़े हुए हैं यही औसाफ़ उनके तौरैत में भी हैं और यही हालात इंजील में (भी मज़कूर) हैं गोया एक खेती है जिसने (पहले ज़मीन से) अपनी सूई निकाली फिर (अजज़ा ज़मीन को गेज़ा बनाकर) उसी सूई को मज़बूत किया तो वह मोटी हुई फिर अपनी जड़ पर सीधी खड़ी हो गयी और अपनी ताज़गी से किसानों को खुश करने लगी और इतनी जल्दी तरक्की इसलिए दी ताकि उनके ज़रिए काफ़ि़रों का जी जलाएँ जो लोग ईमान लाए और अच्छे (अच्छे) काम करते रहे खुदा ने उनसे बख़्शिस और अज़्रे अज़ीम का वायदा किया है